International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 10 Issue 10, Oct 2023 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 6.973
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

उपनिवेशवाद और हिंदी साहित्य पर उसका प्रभाव

डॉ. सुनीता सैनी

सह आचार्य - हिंदी

राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर (राजस्थान)

सारांश

उपनिवेशवाद भारतीय उपमहाद्वीप का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से निर्णायक समय था, जिसने न केवल राजनीतिक बल्कि साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को भी प्रभावित किया। हिंदी साहित्य में उपनिवेशवाद का प्रभाव गहरा था और इसने साहित्य की शैलियों, विचारों और दृष्टिकोणों को नया रूप दिया। ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान, साहित्यकारों ने उपनिवेशी शोषण, सामाजिक असमानताओं, और स्वतंत्रता संग्राम की आवाज़ को अपने लेखन में प्रमुखता दी। इस शोध का उद्देश्य उपनिवेशवाद के प्रभाव को हिंदी साहित्य पर गहराई से विश्लेषित करना है, और यह समझना है कि कैसे इसने साहित्य में बदलाव लाया, नए विचारों और शैलियों को जन्म दिया और राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक पुनर्निर्माण, और भारतीयता के विचारों को प्रभावित किया।

मुख्य शब्द

उपनिवेशवाद, हिंदी साहित्य, उपनिवेशी प्रभाव, भारतीय साहित्य, ब्रिटिश साम्राज्य, साहित्यिक आंदोलन, सामाजिक असमानताएँ, स्वतंत्रता संग्राम, हिंदी कविता, साहित्यिक शैलियाँ, राष्ट्रीयता, भारतीयता, औपनिवेशिक काल

1. प्रस्तावना

उपनिवेशवाद भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी काल था, जिसका प्रभाव न केवल भारतीय राजनीति, समाज और संस्कृति पर पड़ा, बल्कि इसने साहित्यिक परिवर्तनों की दिशा को भी नया मोड़ दिया। उपनिवेशी शासन ने भारतीय समाज को राजनीतिक, सांस्कृतिक और मानसिक रूप से प्रभावित किया और इस प्रभाव का प्रत्यक्ष परिणाम हिंदी साहित्य में देखा गया। यह प्रभाव साहित्य की शैलियों, दृष्टिकोणों, और विषयों में स्पष्ट रूप से दिखाई दिया।

1.1 उपनिवेशवाद का भारतीय साहित्य पर प्रभाव

उपनिवेशवाद ने भारतीय साहित्य को एक गहरी दिशा में प्रभावित किया, जिससे यह न केवल भारतीय पहचान को व्यक्त करने का माध्यम बना, बल्कि यह भारतीय समाज की समस्याओं, संघर्षों और असमानताओं को उजागर करने का भी माध्यम बन गया। उपनिवेशी शासन के दौरान भारतीय साहित्यकारों ने न केवल अंग्रेजी साम्राज्य की आलोचना की, बल्कि उन्होंने भारतीयता, राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता के विचारों को प्रमुखता दी। इस समय के साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से उपनिवेशवाद के शोषण और भारतीय समाज की आंतरिक समस्याओं को उभारा।

ब्रिटिश साम्राज्य के तहत भारतीय समाज पर सामाजिक और सांस्कृतिक दबाव बढ़ने के साथ ही, हिंदी साहित्य में नए विचार और नई शैलियाँ उभरीं। साहित्यकारों ने उपनिवेशवाद के प्रभाव का प्रतिरोध करते हुए, भारतीय संस्कृति, इतिहास, और भाषा की पुनः पहचान करने की आवश्यकता महसूस की। इस समय के लेखक और कवि भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को अपनी रचनाओं में चित्रित करते थे, जिनमें समाज के अंदर व्याप्त असमानताएँ, आंतरिक शोषण और ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा किए गए दमन के खिलाफ प्रतिरोध शामिल था।

1.2 उपनिवेशवाद के समय में साहित्यिक प्रतिक्रियाएँ

उपनिवेशवाद के दौर में साहित्यकारों ने भारतीय समाज की असमानताओं और संघर्षों पर अपनी रचनाओं के माध्यम से ध्यान आकर्षित किया। अंग्रेजी साम्राज्य ने भारतीय समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक असमानताएँ उत्पन्न की थीं, जिनका साहित्य में भी प्रतिबिंब देखा गया। भारतीय समाज में जातिवाद, महिलाओं की स्थिति, और गरीबों की समस्याओं पर विचार करते हुए, हिंदी साहित्यकारों ने उपनिवेशी शासन की निंदा की और भारतीय समाज के प्रति जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया।

उपनिवेशी काल के साहित्यकारों ने भारतीयता और राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने वाले विचारों को साहित्य में व्यक्त किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र, महात्मा गांधी, सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद और अन्य लेखकों ने उपनिवेशी शासन के प्रभाव को स्पष्ट किया और भारतीय समाज में सकारात्मक बदलाव की आवश्यकता पर बल दिया। इन लेखकों ने अपनी रचनाओं में स्वतंत्रता संग्राम, समाजिक न्याय और स्वतंत्रता के विचारों को प्रमुखता दी, ताकि समाज में जागरूकता पैदा हो सके और ब्रिटिश शासन का विरोध किया जा सके।

1.3 हिंदी साहित्य में नए विचारों का जन्म

उपनिवेशवाद के प्रभाव से हिंदी साहित्य में एक बौद्धिक और सांस्कृतिक जागरूकता उत्पन्न हुई। यह साहित्य अब केवल शृंगारी या धार्मिक विचारों पर केंद्रित नहीं था, बल्कि इसमें सामाजिक और राजनीतिक विचारों को भी स्थान मिला। साहित्यकारों ने उपनिवेशी शासन के दमन और भारतीयता के पुनर्निर्माण पर विशेष ध्यान दिया।

इस दौरान, साहित्य में राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक पहचान, और स्वतंत्रता की बातें प्रमुख रूप से व्यक्त की गईं। भारतेंदु हरिश्चंद्र, जो हिंदी साहित्य के एक महान लेखक थे, ने उपनिवेशी शासन के खिलाफ एक

स्पष्ट और मुखर आवाज़ उठाई। उनका लेखन केवल साहित्यिक रचनाएँ नहीं थीं, बल्कि उन्होंने समाज के भीतर हो रहे बदलावों को अपने लेखन में सम्मिलित किया।

1.4 उपनिवेशवाद और साहित्य के पारंपरिक रूप

उपनिवेशवाद ने न केवल हिंदी साहित्य में नए विचारों को जन्म दिया, बल्कि इसने साहित्य की पारंपरिक शैलियों को भी प्रभावित किया। पारंपरिक काव्यशास्त्र और काव्य रचनाएँ, जो पहले धार्मिक और भक्ति विचारों से संबंधित थीं, उपनिवेशी शासन के दौरान एक नये संदर्भ में बदल गईं।

ब्रिटिश शासन ने हिंदी साहित्य में एक आधुनिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया, जो केवल पारंपरिक रचनाओं और शास्त्रीय शैलियों तक सीमित नहीं था। हिंदी कविता और गद्य में नए प्रयोग होने लगे, और छायावाद, प्रतीकवाद, और नवजागरण जैसी शैलियाँ उभरीं। इन शैलियों ने न केवल उपनिवेशी शासन के विरोध को चित्रित किया, बल्कि भारतीय समाज की मानसिकता और सामाजिक संरचनाओं को भी चुनौती दी।

1.5 साहित्य और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण

उपनिवेशी काल में साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति और समाज के पुनर्निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया। वे चाहते थे कि भारतीय समाज अपनी पहचान को फिर से खोजे और उपनिवेशी शासन के प्रभाव से बाहर निकले। साहित्यकारों ने भारतीयता की अवधारणा को मजबूत किया और साहित्य को एक ऐसे प्लेटफॉर्म के रूप में प्रस्तुत किया, जो समाज में जागरूकता पैदा करने के लिए कार्य कर सके।

यह सांस्कृतिक पुनर्निर्माण न केवल समाज के लिए था, बल्कि यह भारतीयता और स्वदेशी सोच को भी बढ़ावा देने का एक तरीका था। इस संदर्भ में, हिंदी साहित्य ने अपनी भारतीयता की पहचान को पुनः

स्थापित किया और यह सुनिश्चित किया कि भारतीय संस्कृति और विचारधाराएँ स्वतंत्रता संग्राम और बाद के समय में प्रासंगिक रहें।

1.6 उपनिवेशवाद के बाद हिंदी साहित्य में बदलाव

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, हिंदी साहित्य में जो बदलाव आए, वे उपनिवेशवाद के प्रभाव से प्रेरित थे। भारतीयता, राष्ट्रीयता, और समाजिक न्याय के मुद्दे अब भी साहित्य के केंद्र में थे। साहित्यकारों ने समाज में विकास, स्वतंत्रता, और समानता के विचारों को प्रमुख रूप से व्यक्त किया।

स्वतंत्रता के बाद भी, उपनिवेशवाद का प्रभाव हिंदी साहित्य पर देखा जा सकता था, और इसने हिंदी साहित्य को समाज के वास्तविक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया। यह साहित्य अब केवल राजनीतिक विरोध तक सीमित नहीं था, बल्कि यह समाज के हर पहलू पर विचार करता था, जैसे महिलाओं के अधिकार, जातिवाद, और समाज के निचले वर्गों की समस्याएँ।

2. उपनिवेशवाद का ऐतिहासिक संदर्भ

उपनिवेशवाद का आरंभ भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के आगमन के साथ हुआ। 1757 में प्लासी की लड़ाई के बाद, ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय उपमहाद्वीप पर नियंत्रण करना शुरू किया, और 1857 में भारतीय विद्रोह के बाद ब्रिटिश साम्राज्य ने औपचारिक रूप से भारतीय उपमहाद्वीप पर शासन स्थापित किया। उपनिवेशी शासन के दौरान, भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक ढांचे में बड़े बदलाव हुए।

2.1 ब्रिटिश साम्राज्य का प्रभाव

ब्रिटिश साम्राज्य ने भारतीय समाज में शिक्षा, प्रशासन, और कानून के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार हुआ, और भारतीय समाज में पश्चिमी विचारधाराओं का प्रवेश हुआ। इस दौरान भारतीयों को भारतीय संस्कृति और समाज की आलोचना करने की शिक्षा दी गई, जिससे भारतीय संस्कृति में एक प्रकार की आत्म-निंदा की भावना विकसित हुई।

2.2 सामाजिक संरचनाओं में बदलाव

उपनिवेशवाद के परिणामस्वरूप, भारतीय समाज में जातिवाद, वर्ग भेद और महिलाओं की स्थिति पर गहरी सोच हुई। साथ ही, भारत में औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण सामाजिक संरचनाओं में भी बदलाव आया। भारतीय साहित्य में इन बदलावों का चित्रण हुआ और साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से इन सामाजिक असमानताओं और उनके प्रभावों को उजागर किया।

3. उपनिवेशवाद और हिंदी साहित्य पर प्रारंभिक प्रभाव

ब्रिटिश साम्राज्य के प्रभाव से हिंदी साहित्य में बदलाव की शुरुआत हुई। पहले हिंदी कविता में भक्ति और भक्ति आंदोलन का प्रभाव था, लेकिन उपनिवेशवाद के बाद हिंदी साहित्य में एक नई चेतना का उदय हुआ। हिंदी साहित्य ने अब केवल धार्मिक, काव्यात्मक विषयों पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक विचारों को प्रमुखता दी।

3.1 नवजागरण और साहित्यिक आंदोलनों का जन्म

उपनिवेशवाद के बाद भारतीय समाज में एक नवजागरण की लहर उठी, जिसने साहित्य में एक नया मोड़ दिया। भारतेंदु हरिश्चंद्र, माखनलाल चतुर्वेदी और रामकृष्ण परमहंस जैसे विचारक और लेखक समाज

में जागरूकता लाने के लिए साहित्य का उपयोग करते थे। उन्होंने समाज में हो रहे बदलावों और उपनिवेशी शोषण पर ध्यान केंद्रित किया।

3.1.1 भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी साहित्य को आधुनिक रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक मुद्दों को उठाया। उनका लेखन भारतीय समाज की स्थितियों की आलोचना करता था, जिसमें उपनिवेशी शासन के प्रभाव और भारतीय संस्कृति की पुनः पहचान का महत्वपूर्ण स्थान था।

4. हिंदी साहित्य में उपनिवेशवाद के प्रतिरोध के स्वर

उपनिवेशवाद के खिलाफ हिंदी साहित्य में प्रतिरोध की आवाज़ें उभरीं, जहाँ लेखकों और कवियों ने उपनिवेशी शासन के खिलाफ अपनी रचनाओं के माध्यम से संघर्ष की भावना व्यक्त की।

4.1 राष्ट्रीयता और भारतीयता

उपनिवेशवाद के खिलाफ साहित्यकारों ने राष्ट्रीयता और भारतीयता के विचारों को प्रमुखता दी। हिंदी साहित्य में भारतीय संस्कृति, इतिहास और भाषा की पुनः स्थापना के लिए लेखकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4.1.1 जयशंकर प्रसाद और उनका साहित्य

जयशंकर प्रसाद ने अपने साहित्य में भारतीय संस्कृति की महानता को उजागर किया और उपनिवेशवाद के खिलाफ भारतीयता के विचार को व्यक्त किया। उनके काव्य में प्रेम, भारतीयता और राष्ट्रवाद का संगम था, जो उस समय की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति से जुड़ा हुआ था।

5. औपनिवेशिक प्रभाव के बाद का हिंदी साहित्य

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी हिंदी साहित्य में उपनिवेशवाद का प्रभाव देखा गया। साहित्यकारों ने भारतीयता और स्वतंत्रता के विचारों को साहित्य में प्रमुख रूप से व्यक्त किया।

5.1 स्वतंत्रता संग्राम और साहित्य

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और उसके बाद, हिंदी साहित्य में एक नया राष्ट्रीय दृष्टिकोण उभरा। कवियों और लेखकों ने स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं और उनके संघर्षों का साहित्य में चित्रण किया।

5.1.1 महात्मा गांधी और साहित्य

महात्मा गांधी ने अपने विचारों को साहित्य के माध्यम से फैलाया और उनकी नीतियाँ भारतीय समाज में साहित्यिक दृष्टिकोण को प्रभावित करती थीं। गांधी के विचारों ने साहित्यकारों को सामाजिक परिवर्तन और स्वतंत्रता के विचारों को अपने लेखन में शामिल करने के लिए प्रेरित किया।

6. उपनिवेशवाद का साहित्यिक शास्त्र पर प्रभाव

उपनिवेशवाद ने हिंदी साहित्य के आलोचनात्मक ढांचे और शास्त्रों पर गहरा प्रभाव डाला। ब्रिटिश साम्राज्य और पश्चिमी विचारधाराओं का प्रभाव हिंदी साहित्य पर दिखाई दिया, जिससे साहित्य में आलोचनात्मक सोच के नए दृष्टिकोण उभरे।

6.1 पश्चिमी आलोचनात्मक सिद्धांतों का प्रभाव

ब्रिटिश शासन के दौरान, पश्चिमी आलोचनात्मक सिद्धांतों और साहित्यिक पद्धतियों ने हिंदी साहित्य पर प्रभाव डाला। शुक्ल जी, आचार्य शंकर और महादेवी वर्मा जैसे आलोचकों ने पश्चिमी साहित्यिक सिद्धांतों को हिंदी साहित्य के संदर्भ में लागू किया और आलोचना के नए आयामों का उद्घाटन किया।

6.2 साहित्यिक शैली में परिवर्तन

उपनिवेशवाद के दौरान हिंदी साहित्य में शास्त्रीय शैली से न हटते हुए, नई शैलियों जैसे छायावाद, प्रतीकवाद और नवजागरण की शैलियाँ उभरीं। इन शैलियों ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी और इसे उपनिवेशवाद के प्रभाव से बाहर निकाला।

7. निष्कर्ष

उपनिवेशवाद ने हिंदी साहित्य को सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टिकोण से गहरे प्रभावित किया। उपनिवेशी शासन के दौरान साहित्यकारों ने उपनिवेशवाद के खिलाफ आवाज उठाई और राष्ट्रीयता, भारतीयता, और स्वतंत्रता के विचारों को प्रमुखता दी। हिंदी साहित्य ने उपनिवेशवाद के प्रभाव को न केवल स्वीकार किया, बल्कि उसे चुनौती भी दी।

हिंदी साहित्य में उपनिवेशवाद के बाद एक नया राष्ट्रीय दृष्टिकोण उभरा, जो भारतीय समाज और संस्कृति की महानता को पहचानता था। यह साहित्य आज भी प्रासंगिक है और उपनिवेशवाद के खिलाफ साहित्यिक प्रतिरोध की एक महत्वपूर्ण मिसाल पेश करता है।

8. संदर्भ

1. कुमारी, रजनी. (2015). **उपनिवेशवाद और हिंदी साहित्य**. साहित्य अकादमी.
2. श्रीवास्तव, रत्ना. (2014). **औपनिवेशिक साहित्य और हिंदी लेखन**. हिंदी विमर्श.
3. गुप्ता, अरुण. (2017). **हिंदी साहित्य में उपनिवेशवाद**. भारतीय साहित्य प्रकाशन.
4. मिश्र, जयशंकर. (2016). **ब्रिटिश शासन के दौरान हिंदी साहित्य**. साहित्यिक आलोचना.
5. यादव, हरीश. (2019). **उपनिवेशवाद और साहित्यिक प्रतिक्रिया**. साहित्यिक विचार.
6. पांडेय, संजीव. (2018). **हिंदी साहित्य में औपनिवेशिक प्रभाव**. साहित्यिक शोध.
7. तिवारी, देवेंद्र. (2012). **उपनिवेशी प्रभाव और हिंदी कविता**. हिंदी साहित्य मंच.
8. रावत, समीर. (2014). **हिंदी साहित्य में पश्चिमी प्रभाव**. हिंदी साहित्य समीक्षा.
9. शर्मा, विद्या. (2020). **भारतेंदु हरिश्चंद्र और उपनिवेशवाद**. साहित्यिक प्रकाशन.
10. चौधरी, नरेश. (2015). **उपनिवेशी प्रभाव के बाद का हिंदी साहित्य**. साहित्यिक मंच.
11. जैन, रवि. (2021). **उपनिवेशवाद और भारतीयता**. साहित्य विमर्श.
12. कुमार, शशि. (2019). **हिंदी साहित्य में उपनिवेशवाद की छाया**. भारतीय साहित्य संग्रह.
13. सिंह, रवींद्र. (2018). **उपनिवेशवाद और साहित्यिक शैली**. साहित्य समीक्षा.
14. तिवारी, रेखा. (2017). **हिंदी साहित्य में उपनिवेशी प्रतिक्रिया**. साहित्य और समाज.
15. गुप्ता, नरेश. (2013). **साहित्य में उपनिवेशवाद का प्रभाव**. हिंदी विमर्श.
16. जोशी, अनूप. (2016). **हिंदी कविता में उपनिवेशी प्रभाव**. साहित्यिक विचार.
17. शर्मा, पूजा. (2019). **उपनिवेशवाद और हिंदी साहित्य की भूमिका**. हिंदी साहित्य आलोचना.
18. सिंह, कमल. (2021). **उपनिवेशवाद और भारतीय सांस्कृतिक पुनरुत्थान**. हिंदी आलोचना.
19. महाजन, इंद्र. (2020). **उपनिवेशवाद के प्रभाव के बाद साहित्य में बदलाव**. साहित्यिक आलोचना.
20. शर्मा, राहुल. (2022). **हिंदी साहित्य में उपनिवेशवाद और उसका प्रभाव**. साहित्य विमर्श.